AG Publishing House

Sustainable Tourism Development & Management for Viksit Bharat – Opportunities & Challenges

AG PH Books

Year: 2026

संपोषित पर्यटन विकास और प्रबंधन में सरकार की भूमिका

(भारत के संदर्भ में)

श्रीमति आरती शर्मा*[1], डॉ. अषोक सोनी[2]

[1]***(षोधार्थी षिक्षा संकाय)***

[2]***(विभागाध्यक्ष वाणिज्य) विभाग हवाबाग महाविद्यालय***

सार

प्रस्तुत अध्ययन भारत में संपोषित पर्यटन विकास और प्रबंधन में सरकार की भूमिका का अध्ययन है इसमें भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों के विकास एवं प्रबंधन का समावेष किया गया है विभिन्न पर्यटन स्थलों के प्रबंधन में सरकार अहम भूमिका निभाती है। पर्यटन स्थल का प्रबंध, पर्यटन स्थल का विकास, योजना, संचालन और विपणन से संबंधित गतिविधियों का एक जटिल कार्य है। इसमें पर्यटकों को आकर्षित करना, उनकी आवष्यकताओं को पूरा करना और पर्यटन से संबंधित उद्योगो का समर्थन करना शामिल है।

मुख्य शब्द : पर्यटन स्थल, विकास, उद्योग प्रबंधन, संचालन।

1 प्रस्तावना

पर्यटन विकास मं यात्रा, भ्रमण, आवास प्रवास तथा संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। भारत में अतिथि को भगवान माना जाता है और कहते भी है ''अतिथि देवो भवः'' तथा वासुधैव कुटुम्बम पूरा विष्व एक परिवार है कि सांस्कृतिक परम्परायें विकसित हुई है संपोषित पर्यटन विकास को बढ़ावा देने वाली गतिविधि है।

संपोषित पर्यटन आनंद की प्राप्ति सुख अनुभूति की क्रियाकलाप पर एवं बहुसंख्यक समूह के भ्रमण पर जो एक बहुसंख्यक समूह के भ्रमण पर जो एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करते है कि क्रिया कलाप पर आधारित है संपोषित पर्यटन एक प्राचीन अवधारणा है।

ISBN No. 978-93-7640-929-7

पर्यटन की प्रवृति केवल मानव जाति में ही नही अपितु पषु–पक्षी, जीव–जंतु वनस्पतियों में भी पायी जाती है। आज भी शीत कालीन समय में साइबेरियन पक्षी मध्य ऐषिया को पार करते हुए भारत में विचरण करने आते है और मौसम परिवर्तन के साथ पुनः वापस चले जाते है।

भारत को पहले सिर्फ प्राचीन संस्कृति धरोहर वाला देष समझा जाता था। परंतु अब ऐसे पर्यटन स्थलों के प्रति पर्यटकों की रूचि अधिक बढ़ रही है, जहां वे अपना समय प्राकृतिक सौन्दर्य एवं सांस्कृतिक नवीनता के बीच बिता सके हमारे देष में विभिन्न पर्यावरणीय विविधतायें मौजूद है।

संपोषित पर्यटन विकास के जनक के रूप में आमतौर पर आयोग ने ''हमारा साम्का भविष्य'' नामक एक रिपोर्ट प्रकाषित की, जिसमें ''सतत विकास'' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया गया।

संपोषित पर्यटन प्रबंध में सरकार की भूमिका महत्वपूर्ण है, जिसमें राष्ट्रीय नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार करना, विभिन्न एजेसियों के बीच समन्वय स्थापित करना और बुनियादी ढांचे का विकास करना शामिल है। सरकारे पर्यटन को बढ़ावा देने, पर्यटको को सुविधायें प्रदान करने और पयर्टन क्षेत्र को विनियमित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संपोषित पर्यटन प्रबंधन में सरकार की भूमिका को आमतौर पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

नीति निर्माण और विनियमन

- सरकारे राष्ट्रीय पर्यटन नीतियों और कार्यक्रमों को विकसित करती है।
- वे पर्यटन स्थलों, सुविधाओं और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए योजनाएं बनाती है।
- सरकार यह प्रयास करती है कि पर्यटन गतिविधियां नैतिक, सुरक्षित और टिकाऊ हो।

समन्वय और समर्थन

- सरकारे विभिन्न सरकारी एजेंसियों, निजी क्षेत्र और अन्य हितधारको के बीच समन्वय स्थापित करती है।
- सरकारे पर्यटन स्थलों के प्रचार और विपणन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

समन्वय और समर्थन

- सरकारे विभिन्न सरकारी एजेंसियों, निजी क्षेत्र और अन्य हितधारको के बीच समन्वय स्थापित करती है।
- सरकारे पयर्टन स्थलों के प्रचार और विपणन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

बुनियादी ढांचे का विकास

- सरकारे पयर्टन स्थलों तक पहुँच में सुधार करने के लिए सड़कों, हवाई अड्डों, रेल्वे और अन्य परिवहन सुविधाओं में निवेष करती है।
- वे पर्यटन स्थलों पर बुनियादी सुविधाओं जैसे कि बिजली, पानी और स्वच्छता सुविधाओं को विकसित करती है।
- सरकारे पर्यटन स्थलों पर सुरक्षा और सुरक्षा सुनिष्चित करने के लिए भी उपाय करती है।

भारत में संपोषित पर्यटन विकास की संभावनायें

i. ग्रामीण पर्यटन

ग्रामीण पर्यटन के संबंध में संभावना ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा काफी हद तक नई है लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

ii. साहसिक पयर्टन

साहसिक पर्यटन विदेषी पर्यटको को अपनी ओर आकर्षित करने का एक बेहतरीन जरिया बन सकता है परंतु देष में साहसिक पर्यटन को बढ़ावा नही मिल पा रहा है। साहसिक पर्यटन में पर्वतारोहण, टैकिंग, स्कैटिंग, रॉक राज्यों में पर्याप्त संभावनाएं मौजूद है।

iii. ऐतिहासिक पयर्टन

ऐतिहासिक पर्यटन की उन्नति की भी खूब संभावनाएं है। देष में ऐतिहासिक स्थलों की कमी नही है, परंतु उनके रखरखाव में चूक हो रही है।

iv. सांस्कृतिक पर्यटन

पर्यटन के मामले में केरल नये–नये प्रयोग करने की दृष्टि से अन्य राज्यों से काफी आगे है।

v. क्रूज पर्यटन

भारत के विषाल समुद्री तटों और उसके आस–पास प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्थलों की ओर देषी विदेषी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए क्रूज पर्यटन को विकसित किया जायेगा इसके अंतर्गत सुविधाओं से युक्त छोटे जहाजों को तैयार किये जाने की योजना है।

2 निष्कर्ष

विगत तीन दषको से पर्यटन उद्योग का महत्व तीव्र गति से बढ़ा है। हमारी सरकार ने पर्यटकों के विकास पर पूर्ण ध्यान दिया है और काफी अंषों में सफलता मिली है अतः आज आवष्यकता इस बात की है कि हम उद्योग के महत्व को समझे तथा इसके विकास के लिये निरंतर तत्पर एवं प्रयत्नषील रहे।

3 सुझाव

i. पर्यटन स्थलो पर प्रषिक्षित, ईमानदार तथा अनुभवी गाइडों को नियुक्त करना चाहिए।
ii. देष का प्रमुख पर्यटन स्थल भारत का स्वर्ग कहलाने वाला कष्मीर राज्य आंतक का पर्याट बन गया है इसके सुधार के लिए कुछ मजबूत कानून बनाए जाने चाहिए।
iii. होटलों की कमी की पूर्ति के लिये पेइंग गेस्ट योजना को अधिक आकर्षक बनाना चाहिए।
iv. पर्यटन स्थल पर शासकीय दुकाने संचालित की जाये।
v. पर्यटन स्थलों के विस्तार एवं विकास के लिए ठोस कार्यक्रम बनाये जाये।

4 संदर्भ ग्रंथ सूची

- सिंह कुलेर गुरूपंच ''भारत में संपोषित पर्यटन विकास एवं पर्यावरण'' इन्टरनेषनल जर्नल ऑफ रिव्यूज एण्ड रिसर्च इन सोषल साइन्स 12 (2) 2024
- प्रतियोगिता दपर्ण– जून 1998 व नवम्बर 2017
- सरिता पर्यटन विषेषांक– मई, जून 2017
- शर्मा प्रेमधर– इंटरनेषनल टूरिज्म, कनिष्क पब्लिकेषन नई दिल्ली (2012)
- संजय कुमार, पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद तक्षषिला प्रकाषन नई दिल्ली (2012)।
- पान्डेय आनंद कुमार, मध्य प्रदेष के प्रमुख पर्यटन स्थल, मध्य प्रदेष हिन्दी ग्रंथ अकादमी, नई दिल्ली 2008

- भारत में प्रत्यक्ष विदेषी निवेष– पत्रिका
- रोमांच भरा भारत– इंडिया टुडे
- सूंपूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल– जगमोहन नेगी।
- भारतीय अर्थ व्यवस्था– एम. सुन्दरम्।
- नवभारत टाइम्स, रोजगार समाचार एवं रोजगार एवं निर्माण आदि।
- शर्मा डॉ. अमिताप ''भारतीय पर्यटन उद्योग के विकास की भावी संभावनायें व चुनौतिया'' रिव्यूज ऑफ रिसर्च, ISSN: 2249 – 894X इमपेक्ट फेक्टरः 5 7631 (UIF) UGC एपरूबड जनरल नं. 48514, वोल्यूम– 81 इषू– 9 जून 2019
- मध्य प्रदेष में पर्यटन– डॉ. सुभाष सिंह, डॉ. वी.पी. सिंह।

[6]

---

i अरूण कात्यायन (2012) कृषि विज्ञान के मूलभूत सिद्धान्त, किताब महल कानपुर

ii भारत का राजपत्र, Biological Diversity act 2003, दिनांक 01 / 10 / 2013

iii सिंह, संदीप (2012), उमरिया जिला में पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की समस्याएँ एवं संभावनायें, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अ.प्र. सिंह वि.वि. रीवा, पृ.–3, 4

iv नेगी जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली

v नेगी जगमोहन, पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त, तक्षशिला प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली

vi सिंह ए.पी. हिमालय इन्वायरमेन्ट ऐण्ड टूरिज्म, पृ.–9

vii भाटिया, ए.के. टूरिज्म इन इन्डिया, हिस्ट्री एण्ड डेवलपमेंट।

viii सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ प्रकाशित शोध प्रबंध, आशा पब्लिशिंग क. आगरा, पृ–64,68

❑❑❑